सं स्तु ति - प त्र

हम संस्तुति करते हैं कि, श्री·पांडुरंग सदाशिव कालभोर द्वारा प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबन्ध - "दीप्ति खण्डेलवाल के उपन्यासों में परिवर्तित जीवन-मूल्य" परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाय।

प्रा·जयवन्त जाधव
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय,
सातारा·

L. B. S. COLLEGE SATARA

पुरुषोत्तम शेठ
प्राचार्य,
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय,
सातारा·

डॉ॰श्रीमती छायादेवी विजयसिंह घोरपडे
एम्॰ए॰,पीएच्॰डी॰
शोध-निर्देशिका
हिन्दी विभाग,
छत्रपति शिवाजी कॉलेज,
सातारा-415 001 (महाराष्ट्र)

प्र मा ण प त्र

मैं डॉ॰श्रीमती छायादेवी विजयसिंह घोरपडे, हिन्दी विभाग, छत्रपति शिवाजी कॉलेज, सातारा, यह प्रमाणित करती हूँ कि, श्री॰पांडुरंग सदाशिव कालभोर ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्॰फिल्॰(हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबन्ध **"दीप्ति खण्डेलवाल के उपन्यासों में परिवर्तित जीवन-मूल्य"** मेरे निर्देशन में बड़े परिश्रम के साथ सफलतापूर्वक पूरा किया है। जो तथ्य प्रबन्ध में प्रस्तुत किए गए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। श्री॰कालभोर के शोध-कार्य के बारे में मैं पूरी तरह से संतुष्ट हूँ।

सौ॰ छायादेवी विजयसिंह घोरपडे
डॉ॰श्रीमती छायादेवी विजयसिंह घोरपडे
(शोध-निर्देशिका के हस्ताक्षर)

सातारा
दिनांक : 31 दिसम्बर,1996

दीप्ति खण्डेलवाल के उपन्यासों में परिवर्तित जीवन-मूल्य

प्र स्या प न

यह लघु-शोध-प्रबन्ध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्·फिल्·(हिन्दी) के लघु-शोध-प्रबन्ध के रूप में प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय कोल्हापुर या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

श्री·पांडुरंग सदाशिव कालभोर
शोध-छात्र के हस्ताक्षर

सातारा
दिनांक : 31 दिसम्बर, 1996

दीप्ति खण्डेलवाल के उपन्यासों में परिवर्तित जीवन-मूल्य

प्रा क्क थ न

साहित्य मानव जीवन के अनुभूत और काल्पनिक सौन्दर्य की भावमय एवं विचारमय अभिव्यक्ति है। अतः साहित्य और मानव जीवन का अन्योन्य सम्बन्ध रहा है। मानव जीवन की विविधता में एकता स्थापित करने के लिए जीवन-मूल्यों का योगदान सर्वोपरि है। साहित्य और जीवन-मूल्यों का घनिष्ठ सम्बन्ध है, साहित्य में सूप्त रूप में जीवन-मूल्य ही निहित रहते हैं। आधुनिक गद्य साहित्य में उपन्यास विधा सर्वाधिक लोकप्रिय विधा हो रही है, क्योंकि उसमें मानव जीवन की यथार्थता का चित्रण हूबहू किया जाता है, इससे जीवन-मूल्यों को व्यंजित करने के लिए बृहत् फलक प्राप्त होता है।

स्वतंत्रता के बाद नारी जागरण, नारी-शिक्षा, प्रचार एवं प्रसार के कारण महिला रचनाकारों की एक नई पीढ़ी का उदय हुआ है। स्वतंत्रता आन्दोलन के बहाने घर का प्रांड़ण छोड़कर यह पीढ़ी खुले प्रांड़ण में विचरण करने लगी। अतः नर-नारी के सूक्ष्म मनोभावों का चित्रण उसके साहित्य में अनायास आने लगा। मानव मन के एक-एक पहलू को अपनी प्रतिभा और कल्पना के बल पर व्यंजित करने का प्रयास होने लगा। परिणामतः उसकी रचनाओं में परिवर्तित जीवन-मूल्यों के विविध आयाम उभरने लगे। दीप्ति खण्डेलवाल ने इन परिवर्तित जीवन-मूल्यों को अपने उपन्यासों के माध्यम से आंकने का प्रयास किया है। अतः उनकी लेखन की एक खासियत यह है कि, यथार्थता की अभिव्यक्ति के साथ-साथ स्त्री-पुरूष सम्बन्धों की तथा दाम्पत्य सम्बन्धों की पोल खोलना और समाज-जीवन की नींव किस प्रकार हिलने लगी है इसे स्पष्टतया उभारना है।

दीप्ति खण्डेलवाल के उपन्यासों में परिवर्तित जीवन-मूल्य पर अभी तक स्वतंत्र रूप से शोध-कार्य नहीं हुआ है। अतः प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबन्ध "दीप्ति खण्डेलवाल के उपन्यासों में परिवर्तित जीवन-मूल्य" इस अभाव की पूर्ती का एक प्रथम प्रयास है।

सम्पूर्ण लघु-शोध-प्रबन्ध छः अध्यायों में विभाजित है। प्रथम अध्याय का नामकरण "विषय-प्रवेश" है। इस अध्याय के अन्तर्गत मूल्य का व्युत्पत्ति-मूलक अर्थ-विस्तार, परिभाषा, अवधारणा निर्माण, भेद, परिवर्तन, संक्रमण, विघटन का विवेचन करते हुए मूल्य परिवर्तन के कारण और दिशाओं के प्रति संकेत किया है। प्रस्तुत अध्याय के अन्त में परिवर्तित जीवन-मूल्य और दीप्ति खण्डेलवाल के विवेच्य उपन्यास के परिप्रेक्ष्य में उनके उपन्यासों का सामान्य परिचय दिया है, तत्पश्चात, अस्तित्वबोध परक जीवन-मूल्य, परिवर्तित सामाजिक, पारिवारिक तथा अन्य जीवन-मूल्यों को स्पष्ट करते हुए परिवर्तित जीवन-मूल्य अभिव्यक्ति के विविध आयामों को स्पष्ट किया है।

द्वितीय अध्याय "दीप्ति खण्डेलवाल के उपन्यासों का सामान्य परिचय" शीर्षक से अभिहित किया गया है। इस अध्याय में विवेच्य उपन्यासों पर प्रकाश डाला गया है। "प्रिया", "कोहरे" और "प्रतिध्वनियाँ" कथ्यचेतना को स्पष्ट करते हुए, उनके प्रतिपाद्य पर भी सोचा गया है।

तृतीय अध्याय का नामाभिधान "दीप्ति खण्डेलवाल के उपन्यासों में परिवर्तित व्यक्तिवादी एवं अस्तित्वबोध परक जीवन-मूल्य" रखा गया है। इसमें व्यक्तिवाद का अर्थ स्पष्ट करते हुए व्यक्तिवाद का उद्भव और विकास भी स्पष्ट किया गया है। तत्पश्चात व्यक्तिवाद को परिपोषक अस्तित्ववाद पर ही सोचा गया है। व्यक्तिवादी एवं अस्तित्वबोध परक उपन्यासों की दीप्ति खण्डेलवाल के उपन्यासों में अस्तित्वबोध पर प्रकाश डाला गया है। ईश्वरीय-अनीश्वरीय अस्तित्वबोध के प्रति भी सोचा गया है। वैयक्तिकता, स्वतंत्रता और चयन, परिवेश पीड़ा और आत्मबोध, भीतरी संघर्ष, संत्रास, निराशा, व्यथा आदि पर प्रकाश डाला गया है। अलगाव और अकेलेपन

पर भी सोचा गया है।

चतुर्थ अध्याय का शीर्षक "दीप्ति खण्डेलवाल के उपन्यासों में परिवर्तित पारिवारिक, सामाजिक तथा अन्य जीवन-मूल्य" है। प्रस्तुत अध्याय में परिवार का अर्थ स्पष्ट करते हुए उसकी परिभाषा पर सोचा गया है। तत्पश्चात विवाहपूर्व प्रेम, विवाहोत्तर प्रेम और यौन-सम्बन्धों पर सोचा गया है। दाम्पत्य सम्बन्धों में परिवर्तन, विवाह के प्रति नयी दृष्टि आदि पर प्रकाश डाला गया है। राजनीतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और नैतिक जीवन-मूल्यों के नये प्रतिमानों पर भी सोचा गया है।

पंचम अध्याय का नामकरण "दीप्ति खण्डेलवाल के उपन्यासों में परिवर्तित जीवन-मूल्यों के अभिव्यक्ति के विविध आयाम" है। इसमें उपन्यास लेखन की विविध प्रणाली पर सोचा गया है। जिसके अन्तर्गत वर्णनात्मक प्रणाली, मनोवैज्ञानिक प्रणाली, खण्डित व्यक्तित्व प्रणाली को स्पष्ट करने की कोशिश की है। नाटकीय, मनोवैज्ञानिक, तार्किक, कथोपकथन प्रणाली को भी व्यंजित करने की कोशिश की है। पूर्व दीप्ति शैली में लिखे गये विवेच्य उपन्यासों के शब्द सौष्ठव पर भी सोचा गया है।

षष्ठम् अध्याय का शीर्षक "समन्वित मूल्यांकन" है। इसमें विवेच्य उपन्यासों के परिप्रेक्ष्य में परिवर्तित जीवन-मूल्यों के विविध आयामों का सिंहावलोकन करते हुए उसका संक्षिप्त मूल्यांकन किया गया है।

प्रबंध की मौलिकता

1. हिन्दी लघु-शोध-कार्य की दिशा में दीप्ति खण्डेलवाल के उपन्यासों में चित्रित प्रतिनिधि स्त्री-पुरूष पात्रों को परिलक्षित करते हुए उनके परिवर्तित जीवन-मूल्यों को आंकने का यह प्रथम प्रयास है।

2· प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध में विवेच्य उपन्यासों की कथ्यचेतना और प्रतिपाद्य को विस्तार के साथ विश्लेषित करने की कोशिश की गई है।

3· व्यक्तिवाद एवं अस्तित्वबोध का पारस्पारिक सम्बन्ध और पारथक्य स्पष्ट किया गया है।

4· परिवर्तित पारिवारिक जीवन-मूल्यों को परिलक्षित करते हुए राजनीतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और नैतिक प्रतिमानों पर सोचा गया है।

5· प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध में अभिव्यक्ति के विभिन्न आयामों पर भी सोचा गया है।

कृतज्ञता-ज्ञापन

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबन्ध का अध्ययन श्रध्दास्पदेशु गुरूवर डा·श्रीमती छायादेवी विजयसिंह घोरपडे, हिन्दी विभाग, छत्रपति शिवाजी कॉलेज, सातारा (महाराष्ट्र) के निर्देशन में किया गया है। शोध-कार्य के लिए उपयुक्त विषय के चयन से लेकर उसकी सम्पूर्ति तक अपने सहज वात्सल्य पूर्ण व्यवहार से मेरे उत्साह को गति देकर उन्होंने अनमोल सहयोग प्रदान किया है। मेरे मन में बार-बार उठी अनेक शंकाओं और समस्याओं का हल किया है और इसी कारण मेरा शोध-कार्य समय पर पूरा हो सका। उनका सम्यक् मार्गदर्शन मेरे लिए एक संस्मरणीय थाती ही रह गया है। विद्यार्थियों के प्रति उनकी अटूट आस्था का अनुभव मैंने स्वयं पाया है। उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना शब्दातीत है, उनके प्रति ऋण स्वीकार का भाव ही श्रेयस्कर है। पितृ-तुल्य ॲडव्होकेट विजयसिंह घोरपडेजी का हार्दिक स्नेह और शुभाशिष निरन्तर मुझे प्रेरणा प्रदान करता रहा। उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करने की अपेक्षा उनका ऋणी रहना ही मुझे पसन्द है। श्रध्दास्पदेशु गुरूवर डा·गजानन शंकर सुर्वेजी और मातृतुल्या श्रीमती देवलताजी का हार्दिक स्नेह और शुभाशिष मुझे निरन्तर शोध-कार्य

की ओर प्रेरित करता रहा। उनके समृध्द ग्रंथालय से मुझे बहुत लाभ हुआ है। उनके प्रति मैं चिर ऋणी रहना पसन्द करता हूँ।

मेरे पिताजी सदाशिव विठोबा कालभोर और माताजी श्रीमती लक्ष्मीबाई सदाशिव कालभोर के शुभाशिष निरन्तर मेरे सम्बल रहे। मेरे बड़े भाईसाहब श्री·भारतजी, उत्तमजी और भाभी श्रीमती सखुबाई और राजश्री ने निरन्तर मुझे इस कार्य में गतिशील बनाने में सहयोग दिया है। मैं तहेदिल से कृतज्ञता ज्ञापन करता हूँ। मेरे बहनोई श्री·प्रभाकरजी, शिवाजी तथा मेरी बहनें श्रीमती लता दीदी और अलका दीदी ने मुझे निरन्तर अपने कार्य के प्रति सचेत किया। अतः उनके प्रति भी मैं कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ।

रयत शिक्षण संस्था के चेअरमन सन्माननीय श्री·एन·डी·पाटील, सचिव प्राचार्य शिवाजीराव भोर भूतपूर्व सचिव डॉ·व्ही·के·घाटे, सहसचिव श्री· आर·एच·भोसले, भूतपूर्व सचिव एवं प्राचार्य आर·डी·गायकवाड, प्राचार्य पुरूषोत्तम शेठ, प्राचार्य डॉ·बी· एल·पाटील, पिंपरी चिंचवड, प्राचार्य बी·ए·पाटील, कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय राजापुर, प्रा·जयवंत जाधव, प्रा·रूकसाना शेख, प्रा·लिपारे व्ही·एस·, प्रा·आढाव एस·डी·, डॉ·शिवाजी निकम आदि महानभावों के प्रति मैं आभारी हूँ।

शिवाजी विश्वविद्यालय के भूतपूर्व हिन्दी विभागप्रमुख डॉ·व्ही·के·मोरेजी और हिन्दी विभाग प्रमुख डॉ·पी·एस·पाटीलजी ने समय-समय पर मुझे सत् परामर्श दिया है, अपने व्यस्त समय से समय निकाल कर मेरी समस्याएँ सुलझाने की कोशिश की है। अतः उनके प्रति ऋण का भाव स्वीकार करना ही मैं यथोचित मानता हूँ। इसी विश्वविद्यालय के डॉ·अर्जुन चव्हाण और आदरणीय गुरूवर श्रीमती एम·एस·जाधव प्राध्यापक श्री·जाधवजी और श्री·शांतिलाल शहा के प्रेरणा भरे बोल मेरे कार्य में निरन्तर गति देते रहे। उनके प्रति मैं तहेदिल से कृतज्ञता ज्ञापन करता हूँ।

मेरे परमप्रिय मित्र प्रा·सी·एच·गिड्डेजी ने समय-समय पर मुझे सहायता की है और मेरा कार्य गतिशील बनाने में भी योगदान दिया है। अतः मैं उनके

प्रति हृदय से आभार प्रकट करता हूँ। मेरे मित्र प्रा·आर·पी·भोसले, प्रा·फराटे, प्रा·काटकर, प्रा·कुमार जाधव, श्री·चंदू जाधव, प्रा·दत्ता बागल, श्री·पोपट भोसले, प्रा·पांढरे, श्री·गणपति पेकार, श्री·सुभाष घोरपडे और मेरे सभी लेबर स्कीम के बन्धुओं के प्रति आभारी हूँ।

मेरी पत्नी श्रीमती वैशाली ने बड़े संयम से इस लघु-शोध-कार्य में साथ दिया और हर वक्त मुझे प्रोत्साहित किया। मेरी बेटी कु·अमृता ने भी उचित साथ दिया। अतः इनके सहयोग को मैं कैसे भूल सकता हूँ।

लाल बहादुर शास्त्री कॉलेज, सातारा के ग्रन्थपाल श्री·एस·ई·जगताप और उनके कर्मचारियों ने समय-समय पर मुझे जो सहायता की है उन सबके प्रति मैं आभारी हूँ।

लेखिका दीप्ति खण्डेलवाल और अन्य लेखक-लेखिकाएँ तथा सन्दर्भ-ग्रन्थों के लेखक, सम्पादक आदि का मैं हृदय से ऋणी हूँ।

इस लघु-शोध-प्रबंध का अत्यंत तत्परता से टंकन-लेखन करने वाले "**रिलॅक्स सायक्लोस्टायलिंग, सातारा**" के श्री·मुकुन्द ढवले और उनके सहयोगी श्री·सुशीलकुमार कांबले, राजू कुलकर्णी की अमूल्य सहायता के लिए मैं कृतज्ञ रहूँगा।